पद चालीस का छिपा हुआ इतिहास - क्रमांक तैंतीस

यहेजकेल क्रमांक चौदह

Jeff Pippenger
2026-10-27

उत्पत्ति के चौथे और पाँचवें अध्यायों में कैन की वंशावली और शेत की वंशावली के बीच अंतर दर्शाया गया है।

भला लेमेक और बुरा लेमेक

दोनों वंशधाराएँ उद्धार से वंचित लोगों और उद्धार पाए हुए लोगों के बीच के अंतर को दर्शाती हैं, और इन दोनों वंशधाराओं के कुछ वंशज इन परस्पर विपरीत वंशधाराओं के समानांतर 'वंशज-प्रतीकों' का प्रतिनिधित्व करते हैं। कैन एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसके मन में पाप के लिए कोई पश्चात्ताप नहीं है और जो केवल अपनी ही दशा पर शोक करता है।

> और उसने कहा, तूने क्या किया है? तेरे भाई के लहू की पुकार भूमि से मेरी ओर उठ रही है। और अब तू उस भूमि की ओर से शापित है, जिसने तेरे हाथ से तेरे भाई का लहू ग्रहण करने के लिए अपना मुँह खोला है; जब तू भूमि को जोतेगा, तब वह आगे से तुझे अपनी पूरी उपज न देगी; तू पृथ्वी पर भगोड़ा और भटकनेवाला होगा। और कैन ने यहोवा से कहा, मेरा दण्ड इतना बड़ा है कि मैं उसे सह नहीं सकता। देख, तूने आज मुझे भूमि से निकाल दिया है; और मैं तेरी दृष्टि से ओझल रहूँगा; और पृथ्वी पर भगोड़ा और भटकनेवाला होऊँगा; और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पाएगा, वह मुझे मार डालेगा। और यहोवा ने उससे कहा, इसलिए जो कोई कैन को मारेगा, उससे सात गुना प्रतिशोध लिया जाएगा। और यहोवा ने कैन पर एक चिह्न लगाया, ताकि जो कोई उसे पाए, वह उसे मार न डाले। और कैन यहोवा के सम्मुख से चला गया और अदन के पूर्व में नोद देश में जा बसा। उत्पत्ति 4:10–16।

कैन पश्चात्ताप न करने वाले लोगों के एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो केवल अपनी ही दुःखपूर्ण दशा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसे उन्होंने भलाई करने का प्रयास करने से इनकार करके स्वयं अपने ऊपर ला लिया है।

> परन्तु उसने कैन और उसकी भेंट को ग्रहण नहीं किया। और कैन अत्यन्त क्रोधित हुआ, और उसका मुख उतर गया। और यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित है? और तेरा मुख क्यों उतरा हुआ है? यदि तू भला करे, तो क्या तुझे स्वीकार नहीं किया जाएगा? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर पड़ा है। और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा। उत्पत्ति 4:5–7।

छह मृत्युएँ—तीन अल्फ़ा और तीन ओमेगा

पिछले लेखों में हमने हनोक को पहले स्वर्गदूत के प्रतीक के रूप में, लेमेक को दूसरे स्वर्गदूत के प्रतीक के रूप में, मतूशेलह को मध्यरात्रि की पुकार के रूप में और नूह को तीसरे स्वर्गदूत के रूप में पहचाना था। शेत के वंश के लेमेक की मृत्यु सात सौ सतहत्तर वर्ष की आयु में, जलप्रलय से पाँच वर्ष पहले हुई थी; मतूशेलह की मृत्यु जलप्रलय के समय हुई थी। लेमेक की मृत्यु के पाँच वर्ष बाद मतूशेलह की मृत्यु हुई, और इसलिए उनकी मृत्यु की ये घटनाएँ यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु की प्रतीक हैं, जिसके एक दशमलव पाँच (1.5) वर्ष बाद यरूशलेम, अर्थात् मेम्ने की पत्नी, की मृत्यु हुई।

> और मुझ यूहन्ना ने पवित्र नगर, नए यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर की ओर से उतरते देखा, जो अपने पति के लिए सुसज्जित दुल्हन के समान तैयार किया गया था। प्रकाशितवाक्य 21:2।

यहेजकेल की पत्नी और लेमेक की अल्फ़ा मृत्युएँ, जो यरूशलेम और मतूशेलह की ओमेगा मृत्युओं से संबद्ध हैं, जॉन पालायोलोगोस की मृत्यु की पूर्वप्रतीक थीं, जिसके पाँच वर्ष बाद कॉन्स्टैन्टिनोपल की प्राचीरों पर कॉन्स्टैन्टाइन ग्यारहवें की मृत्यु हुई। लेमेक की रेखा पाँच वर्षों को चिह्नित करती है, जिनके अंत में पशुओं के प्रवासन की सात दिनों की एक अवधि है। पूर्वी रोम की रेखा पाँच वर्षों को तथा उन कुल पाँच वर्षों के भीतर चार वर्षों की एक अवधि को भी दर्शाती है। यहेजकेल की रेखा दो वर्षों और एक दशमलव पाँच वर्ष (1.5), दोनों को दर्शाती है। बाबुल द्वारा यरूशलेम के विनाश की यहेजकेल की रेखा 66 से 70 तक रोम द्वारा यरूशलेम के दूसरे विनाश के साथ संरेखित होती है। यरूशलेम के विनाश की रोमी रेखा चार वर्षों की अवधि और साढ़े तीन वर्षों की अवधि, दोनों प्रस्तुत करती है। उन चार प्रतीकात्मक रेखाओं में से प्रत्येक ने अपनी भविष्यसूचक गवाही के अंतर्गत एक नहीं, बल्कि दो प्रतीकात्मक अवधियाँ प्रस्तुत कीं।

लेमेक, जॉन पालायोलोगोस और यहेजकेल की पत्नी एक ऐसी समयावधि के अल्फ़ा मार्गचिह्न का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका अंत एक ओमेगा मृत्यु के साथ होता है। तीनों रेखाओं में से दो ऐसी घेराबंदी का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसका अंत उनके अपने-अपने समकक्षों की मृत्यु के साथ होता है। शेष रेखा का अंत पशुओं के जहाज़ पर चढ़ने के साथ होता है। ओमेगा समकक्ष नूह के जलप्रलय को यरूशलेम के विनाश और कुस्तुंतुनिया की दीवारों के विनाश के साथ संरेखित करता है। तीनों ओमेगा प्रतीक शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय परीक्षा-काल की समाप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निश्चय ही, नूह के जहाज़ की गवाही में कोई घेराबंदी नहीं थी, परन्तु जहाज़ में प्रवेश के लिए एक ढलवाँ चढ़ाई-पथ अवश्य रहा होगा। यदि लदान के लिए प्रयुक्त इस चढ़ाई-पथ को घेराबंदी के चढ़ाई-पथ का प्रतीक माना जाए, तो मृत्यु की तीनों गवाहियाँ घेराबंदी को इंगित करती हैं। 66 से 70 तक यरूशलेम के विनाश की रोमी कालरेखा में, 66 में सेस्तियुस द्वारा घेराबंदी की गई थी और 70 में तीतुस द्वारा दूसरी घेराबंदी की गई थी।

चार वर्ष

वे चार वर्ष, जिनका समापन 1453 में कुस्तुन्तुनिया की घेराबंदी के साथ होता है, प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में “पाँच महीनों” की इस्लामी भविष्यवाणी की दूसरी चार-वर्षीय अवधि को दर्शाते हैं। “पाँच महीनों” की भविष्यवाणी में पहली चार-वर्षीय अवधि निकोमीडिया की घेराबंदी के दौरान 1333 से 1337 तक थी। वह घेराबंदी 27 जुलाई, 1299 से आरंभ हुए अड़तीस वर्षों के समापन को भी दर्शाती थी। यरूशलेम के दो विनाश, कुस्तुन्तुनिया का एक विनाश, जलप्रलय और निकोमीडिया की घेराबंदी, 200 ईसा पूर्व से 198 ईसा पूर्व तक चले पानियम के अभियान के पाँच साक्षी हैं; वह अभियान छठा साक्षी होगा, और इनके अतिरिक्त कई अन्य साक्षी भी हैं।

यरूशलेम के दोनों विनाशों को “रेखा पर रेखा” आसानी से संरेखित किया जा सकता है। जलप्रलय और पूर्वी रोम की रेखा को उनकी परस्पर अनुरूप अल्फ़ा और ओमेगा मृत्युओं के आधार पर संरेखित किया जाता है। पैनियम के सैन्य अभियान को विशेष रूप से यहेजकेल की 587 ईसा-पूर्व की रेखा के साथ संरेखित किया जाता है, क्योंकि घेराबंदी की दोनों अवधियाँ दो-दो वर्षों की हैं। पैनियम को दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय के पंद्रहवें पद में दर्शाया गया है, जो सोलहवें पद से पहले आता है; सोलहवाँ पद शीघ्र आने वाले रविवार के कानून को दर्शाता है, ठीक वैसे ही जैसे 586 ईसा-पूर्व और 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाशों ने दर्शाया था। पैनियम के युद्ध और सीदोन की घेराबंदी की दो-वर्षीय अवधि इन रेखाओं में से प्रत्येक को दानिय्येल के ग्यारहवें अध्याय के चालीसवें पद के छिपे हुए इतिहास में ले आती है।

एक चिह्न

यरूशलेम के दोनों विनाशों से जुड़ी घेराबंदियों में पहला भविष्यसूचक मार्गचिह्न एक संकेत को निरूपित करता है; सन् 66 में सेस्टियस और यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु, दोनों ही अल्फ़ा संकेत थे। लामेक भी पहला मार्गचिह्न है, और इसलिए, दो की गवाही के आधार पर, लामेक भी एक संकेत है। उसकी 777 वर्ष की आयु उस विजयी कलीसिया के

संकेत को निरूपित करती है, जो तीन तत्त्वों से मिलकर बनी है: एक भविष्यद्वक्ता, एक याजक और एक राजा।

> इसके अतिरिक्त मैंने उन्हें अपने विश्रामदिन भी दिए, ताकि वे मेरे और उनके बीच एक चिह्न हों, जिससे वे जानें कि मैं उन्हें पवित्र करने वाला प्रभु हूँ। यहेजकेल 20:12।

300 वर्ष

हनोक, जो शेत की वंशावली में आदम से सातवाँ था, 300 वर्षों तक परमेश्वर के साथ चला और स्वर्ग में उठा लिया गया। '300' अग्रदूतों के 1843 के तीन सौ चार्टों, उनके अनुरूप तीन सौ मिलरवादी प्रचारकों और साथ ही गिदोन की तीन सौ सैनिकों की सेना का प्रतीक है। हनोक, मिलरवादी प्रचारक और गिदोन के तीन सौ सैनिक एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिमशोन ने 300 लोमड़ियाँ लीं और उन्हें दो-दो की जोड़ियों में बाँध दिया, इस प्रकार 150 और एक ऐसे प्रतीक को इंगित किया जो एक साथ बँधा हुआ है और जिसका कुल योग तीन सौ है।

> और शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ीं, मशालें लीं, और दो-दो लोमड़ियों की पूँछें आपस में मिलाकर प्रत्येक जोड़ी की दो पूँछों के बीच एक मशाल रख दी। और जब उसने मशालों में आग लगा दी, तब लोमड़ियों को पलिश्तियों की खड़ी फसल में छोड़ दिया और फसल की पूलियों के ढेरों तथा खड़ी फसल, दोनों को दाख की बारियों और जैतून के वृक्षों समेत जला डाला। न्यायियों 15:4, 5.

प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में इस्लाम से संबंधित पाँच-पाँच महीने की दो भविष्यवाणियाँ "आग" और "पूँछों" को इस्लाम की विशेषताओं के रूप में चिह्नित करती हैं।

> और इस प्रकार मैंने दर्शन में उन घोड़ों और उन पर बैठे हुए सवारों को देखा, जिनके वक्ष-कवच आग, धूम्रकान्त मणि और गन्धक के समान थे: और घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे; और उनके मुँह से आग, धुआँ और गन्धक निकलते थे। इन तीनों से मनुष्यों में से एक-तिहाई मार डाले गए, अर्थात् उस आग, उस धुएँ और उस गन्धक से, जो उनके मुँह से निकलते थे। क्योंकि उनकी सामर्थ्य उनके मुँह में और उनकी पूँछों में है: क्योंकि उनकी पूँछें सर्पों के समान थीं, और उन पूँछों के सिर भी थे, और उन्हीं से वे हानि पहुँचाते हैं। प्रकाशितवाक्य 9:17–19।

इस्लाम की शक्ति उनके मुखों और उनकी पूँछों दोनों में है।

> और उनकी पूँछें बिच्छुओं की पूँछों के समान थीं, और उनकी पूँछों में डंक थे: और उनमें पाँच महीने तक मनुष्यों को पीड़ा पहुँचाने की सामर्थ्य थी। और उनके ऊपर एक राजा था, जो अथाह कुण्ड का दूत है, जिसका नाम इब्रानी भाषा में अबद्दोन, परन्तु यूनानी भाषा में अपुल्लयोन है। प्रकाशितवाक्य 9:10, 11।

यातना देने और मार डालने की इस्लाम की शक्ति उनके मुखों और पूँछों, दोनों में है, जो उनके मुखों और पूँछों से निकलती है।

> इसलिए प्रभु एक ही दिन में इस्राएल से सिर और पूँछ, डाल और नरकट काट डालेगा। वृद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति ही सिर है; और झूठ की शिक्षा देने वाला भविष्यद्वक्ता ही पूँछ है। क्योंकि इस प्रजा के अगुवे उसे भटकाते हैं; और जो उनकी अगुवाई में चलते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं। यशायाह 9:14–16।

इस्लाम और इस्राएल भविष्यवाणी की दृष्टि से जुड़े हुए हैं, क्योंकि दोनों अब्राहम की संतान हैं, और प्रत्येक वंश-रेखा में "सिर" "वयोवृद्ध और प्रतिष्ठित" जन हैं तथा "पूँछ" "झूठ की शिक्षा देने वाला नबी" है। इस्लाम के संदर्भ में झूठ की शिक्षा देने वाला प्राचीन नबी मुहम्मद है। क़ुरआन उन झूठों का प्रतिनिधित्व करता है जो इस्लाम की टिड्डियों को प्रेरित करते हैं, और वयोवृद्ध तथा प्रतिष्ठित जन उनका राजनीतिक नेतृत्व हैं। इस्लाम का संचालन राजकौशल (मुख) द्वारा होता है, जो क़ुरआन के झूठों (पूँछ) से प्रेरित होता है। शिमशोन की तीन सौ लोमड़ियों को पाँच-पाँच महीनों के दो समूहों में बाँटा गया था, जिन्हें आग, धुएँ और गंधक के द्वारा यातना देनी है और मार डालना है।

अग्नि, धुआँ और गंधक

अग्नि, धुआँ और गन्धक में तीन स्वर्गदूतों के भविष्यवाणी-संबंधी लक्षण विद्यमान हैं। प्रथम और अंतिम अग्नि के प्रकार हैं। "गन्धक" शब्द का मूल एक दिव्य चमक का द्योतक है। अग्नि किसी संदेश का प्रतीक है; धुआँ उस संदेश का प्रभाव है और गन्धक किसी धार्मिक संदेश का परिचायक है। ये तीनों प्रकाशितवाक्य के चौदहवें अध्याय के तीन स्वर्गदूतों के सच्चे संदेश के नकली प्रतिरूप हैं। लौह वक्ष-कवच को अग्नि, धूम्रकान्त और गन्धक के रूप में निरूपित किया गया है। यह महायाजक की चपरास का नकली प्रतिरूप है। महायाजक की चपरास एक लाख चवालीस हज़ार को ऐसे बारह मानवीय रत्नों के रूप में दर्शाती है जो ऊरीम और तुम्मीम द्वारा निरूपित ईश्वरत्व के साथ संयुक्त हैं। प्राचीन काल का धूम्रकान्त गहरे नीले-काले अथवा धूमिल बैंगनी रंग का होता था। इस्लाम के वक्ष-कवच का धूम्रकान्त उस धुएँ के अनुरूप है जो इस्लाम के मुखों (राज्य) और पूँछों (कलीसिया) से निकलता है।

परमेश्वर के साथ 300 वर्ष तक चलने के बाद हनोक का स्वर्ग में उठा लिया जाना 300 की संख्या को प्रथम स्वर्गदूत के उस संदेश से जोड़ता है, जो 1798 में आया था। प्रथम स्वर्गदूत के उस संदेश को 11 अगस्त, 1840 को प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में वर्णित पाँच महीनों की भविष्यवाणी की पूर्ति के साथ सामर्थ्य प्रदान किया गया। इस अध्याय में पाँच महीनों की दोनों अवधियाँ पंक्ति पर पंक्ति एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। यह बात केवल हाल ही में समझी गई कि पद पाँच और पद दस में उल्लिखित पाँच महीने एक सौ पचास-एक सौ पचास वर्षों की दो अलग-अलग अवधियाँ हैं। जब इस सत्य को पहचाना गया, तब शिमशोन ने लोमड़ियों को आपस में बाँधकर उनके एक सौ पचास जोड़े बनाए।

शिमशोन (जिसका अर्थ "सूर्य" है) के भविष्यसूचक इतिहास में, जब नीनवे के युद्ध द्वारा कुंजी को निरूपित किया गया, तब गर्त से निकले "धुएँ" ने सूर्य को अंधकार से ढक दिया। मिलरपंथियों ने इस्लाम के गर्त के धुएँ द्वारा सूर्य को ढक दिए जाने को सही रूप से मसीह के उस सुसमाचार को ढक दिए जाने के रूप में पहचाना, जिसका प्रतीक सूर्य (शिमशोन) है। शिमशोन की गवाही और प्रकाशितवाक्य के नौवें से ग्यारहवें अध्यायों में वर्णित इस्लाम के बीच कई अन्य संबंध भी हैं।

शिमशोन के इतिहास में तीन की संख्या उन तीन दिनों में दिखाई देती है, जिनके भीतर विवाह के अतिथियों को पहेली सुलझानी थी। शिमशोन तीन स्त्रियों के संपर्क में आता है: तिम्ना की अपनी पत्नी, वेश्या और दलीला। प्रभु का आत्मा शिमशोन पर तीन बार उतरता है: सिंह के प्रसंग में, अश्कलोन में और लेही में। सत्य बताने से पहले शिमशोन दलीला को तीन झूठे उत्तर देता है। तीन की संख्या परमेश्वरत्व का, साथ ही अजगर, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के छद्म परमेश्वरत्व का, और विजयी कलीसिया की त्रिविध संरचना का भी प्रतीक है।

तीस एक याजक की संख्या है, और शिमशोन के विवाह-भोज में तीस साथी लाए गए थे। फिर शिमशोन ने अतिथियों के पहेली बूझ लेने पर उन्हें तीस चादरें और तीस वस्त्र देने की बाज़ी लगाई। उसकी पहेली का भेद विश्वासघातपूर्वक खोल दिए जाने पर, शिमशोन ने शर्त के अनुसार भुगतान करने के लिए अश्कलोन के तीस पुरुषों को मार डाला। तीस की संख्या 300 का भविष्यसूचक दशमांश है, और हनोक के तीन सौ वर्षों तक परमेश्वर के साथ चलने के अनुरूप, शिमशोन द्वारा पकड़ी और एक सौ पचास जोड़ों में एक साथ बाँधी गई तीन सौ लोमड़ियाँ प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में पाँच महीनों की उन दो भविष्यवाणियों से जुड़ती हैं, जिन्हें पंक्ति पर पंक्ति की पद्धति द्वारा आपस में जोड़ा गया है। तीन सौ, तीन हज़ार का भविष्यसूचक दशमांश है, और तीन हज़ार एक अवशेष का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे वह धर्मी अवशेष हो, जिसे पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास में आए लोग निरूपित करते हैं, या अधर्मी अवशेष हो, जिसे सोने के बछड़े से संबंधित विद्रोह के समय लेवियों के हाथों मारे गए लोग निरूपित करते हैं।

सोने के बछड़े से जुड़ा विद्रोह और पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास में आए लोग, दोनों शीघ्र आनेवाले रविवार के कानून के समय भविष्यसूचक रूप से एक-दूसरे से मेल खाते हैं। एक शेष जनसमूह परमेश्वर की वाचा की प्रजा में से एक शेष जनसमूह का और परमेश्वर की वाचा की प्रजा के झुंड से बाहर के लोगों में से एक शेष जनसमूह का प्रतिनिधित्व करता है। शिमशोन की गवाही में तीन हज़ार का पहला उल्लेख उन यहूदियों के संबंध में है जिन्होंने पलिश्तियों को तुष्ट

करने के लिए शिमशोन को बंदी बनाया था, और दूसरा उल्लेख पलिश्तियों के संबंध में है। न्याय परमेश्वर के घराने से आरंभ होता है, और उसके बाद उन ग्यारहवें घंटे के मज़दूरों का न्याय होता है जो अभी भी बाबुल में हैं। शिमशोन की गवाही तीन हज़ार को शेष जनसमूह के प्रतीक के रूप में भी पुष्ट करती है और न्याय-प्रक्रिया के क्रम को भी पुष्ट करती है। हनोक तीन सौ वर्षों तक परमेश्वर के साथ चलता रहा, और इस प्रकार वह परमेश्वर की वाचा की प्रजा के उस शेष जनसमूह का प्रतिनिधित्व करता है जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखता। वह शेष जनसमूह वे एक लाख चवालीस हज़ार लोग हैं जिन्हें प्रकाशितवाक्य के सातवें अध्याय में बड़ी भीड़ के विपरीत प्रस्तुत किया गया है।

300 का दशमांश 30 है, जो एक याजक का प्रतीक है, और इसके अतिरिक्त, तीस के दशमांश के रूप में संख्या तीन परमेश्वरत्व के साथ-साथ अजगर, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के छद्म परमेश्वरत्व का भी प्रतिनिधित्व करती है। संख्या तीन विजयी कलीसिया के त्रिविध विभाजन का भी प्रतिनिधित्व करती है, जिसे राजा दाऊद, जिन्होंने तीस वर्ष की आयु में राज्य करना आरंभ किया था, याजक यूसुफ, जिन्होंने तीस वर्ष की आयु में सेवा आरंभ की थी, तथा भविष्यद्वक्ता और याजक यहेजकेल, जिन्होंने सत्रहवें जुबली चक्र के तीसवें वर्ष में अपनी बाईस वर्षों की सेवकाई आरंभ की थी, निरूपित करते हैं। एक याजक के रूप में उनकी आयु तीस वर्ष रही होगी।

भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में दर्शाई गई तीन प्रतीकात्मक इकाइयों में से प्रत्येक को घेराबंदी आरंभ करने वाले मार्गचिह्न पर सातवें दिन के सब्त की परमेश्वर की मुहर प्राप्त होती है। मृत्यु के दो साक्षी, सन् 66 में यरूशलेम के विनाश के द्वितीयक साक्षी के साथ मिलकर, इस बात के तीन साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि घेराबंदी का मार्गचिह्न एक 'चिह्न' है।

संक्रमण का मार्गचिह्न

जब घेराबंदी आरम्भ होती है, तब परमेश्वर की त्रिविध विजयी कलीसिया पर मुहर लगा दी जाती है, जिसका प्रतीक लेमेक है। यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु यह स्पष्ट करती है कि ठीक उसी मार्गचिह्न पर पूर्ववर्ती वाचा के लोग पूर्णतः दरकिनार कर दिए जाते हैं। यह मार्गचिह्न लौदीकिया से फिलेदिलफिया में संक्रमण को चिह्नित करता है, जिसे संघर्षरत कलीसिया के विजयी कलीसिया में संक्रमण के रूप में भी चित्रित किया गया है; इस प्रकार वह आठवीं कलीसिया बन जाती है, जो उन सातों में से है। तीसरे स्वर्गदूत के मिलरवादी इतिहास में, जो 22 अक्टूबर, 1844 से 1863 के विद्रोह तक विस्तृत था, वह मार्गचिह्न 1856 की उस समयावधि को दर्शाता था जब जेम्स और एलेन व्हाइट, दोनों ने इस आंदोलन की पहचान लौदीकियाई के रूप में करनी आरम्भ की थी। 1856 में फिलेदिलफियाई मिलरवादी आंदोलन लौदीकियाई मिलरवादी आंदोलन में परिवर्तित हो गया। सात वर्ष बाद लौदीकियाई मिलरवादी आंदोलन का अंत हो गया, क्योंकि यह आंदोलन लौदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया बन गया।

सन् 313 में भी उस मार्गचिह्न का पूर्वरूप दिखाई देता है, जब स्मुरना की कलीसिया का अंत हुआ और पिरगमुन की कलीसिया का आरंभ हुआ। दोनों को साथ रखकर देखने पर, सन् 1856 में धर्मी फिलेदिलफिया से अधर्मी लौदीकिया में हुआ संक्रमण, सन् 313 में धर्मी स्मुरना से अधर्मी पिरगमुन में हुए संक्रमण के अनुरूप है, और यह संक्रमण-बिंदु भी उस मार्गचिह्न को एक संकेत के रूप में पहचानता है। कई साक्षियों की गवाही के आधार पर, घेराबंदी का आरंभ एक संकेत से होता है। जब लेमेक की मृत्यु के समय तीसरे स्वर्गदूत के उस आंदोलन पर मुहर लगाई जाती है जो एक लाख चवालीस हज़ार जनों से बना है, तब ध्वज के रूप में ऊँचा उठाए जाते समय वे मुहरबंद और पूर्णतः एकजुट होते हैं, क्योंकि घेराबंदी की भविष्यसूचक संरचना का प्रथम मार्गचिह्न एक संकेत है।

जॉन पालायोलोगोस की मृत्यु इस्लाम के उस मार्गचिह्न की पहचान कराती है, जब पूर्वी रोम को इस्लाम की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता है। यरूशलेम की घेराबंदी और उसका विनाश बाबुल और रोम के दो साक्षी प्रस्तुत करते हैं। यहेजकेल की डेढ़ वर्ष की अवधि उन लौदीकियाई लोगों का प्रतिनिधित्व करती है, जिन्होंने उत्तर के राजा की बंधुआई में ले जाए जाने के विषय में चेतावनी के संदेश को देखने और सुनने से इनकार किया। सेस्टियस का चिह्न उन फिलेदिलफियाई लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो उत्तर के राजा से बच निकलते हैं। ये दोनों चिह्न आंतरिक भविष्यवाणी-संबंधी संदेश से संबंधित हैं, और लेमेक का 777 भी उसी से संबंधित है। पंक्ति पर पंक्ति, घेराबंदी के

समय एक वर्ग को बंधुआई में ले जाया जाता है और दूसरा वर्ग उत्तर के राजा के हाथ से बच निकलता है।

जॉन पालाइओलोगोस की मृत्यु उस मार्गचिह्न पर इस्लाम की भूमिका को चिह्नित करके बाह्य भविष्यवाणीय संदेश को निरूपित करती है, जहाँ लेमेक द्वारा निरूपित लोगों पर मुहर लगाई जाती है। यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश के दौरान बच निकलने वाले तथा बंदी बनाए जाने वाले लोग इस बात पर बल देते हैं कि चरित्र का प्रकटीकरण घेराबंदी की भविष्यवाणीय अवधि के अल्फा मार्गचिह्न पर ही होता है। इन दोनों वर्गों को दो लेमेकों द्वारा निरूपित किया गया है। एक वर्ग नैशविल को चेतावनी देता है, और दूसरा वर्ग इनकार करता है।

> और यहोवा ने उससे कहा, इसलिए जो कोई कैन की हत्या करेगा, उससे सात गुना बदला लिया जाएगा। और यहोवा ने कैन पर एक चिह्न लगाया, ताकि जो कोई उसे पाए, वह उसे मार न डाले। उत्पत्ति 4:15।

विद्रोह का चिह्न

कैन को उसके विद्रोह का चिह्न मिला। उसके विद्रोह के चिह्न को मानवजाति के लिए इस चेतावनी के रूप में समझा गया कि यदि वे कैन की हत्या करेंगे, तो उन पर परमेश्वर का सातगुना न्यायादेश लागू होगा। एक अर्थ में इस चिह्न को कैन के लिए परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के रूप में समझा जा सकता है, परन्तु भविष्यद्वाणी की दृष्टि से यह बाइबल की अन्तिम पुस्तक में विद्रोह के चेतावनी-चिह्न के अनुरूप है। ओमेगा पुस्तक प्रकाशितवाक्य में पशु के चिह्न का पूर्वप्रतिरूप अल्फा पुस्तक उत्पत्ति में कैन के विद्रोह का चिह्न था। कैन के चिह्न में निहित चेतावनी यह है कि जो कोई कैन के समान चरित्र प्रदर्शित करेगा, उसे भी परमेश्वर अस्वीकार करेंगे और उसका न्याय करेंगे। कैन पर लगा चिह्न पशु के चिह्न के अनुरूप है, और यह चेतावनी इस आज्ञा पर बल देती है कि अपने भाई की हत्या करने के कैन के विद्रोह का अनुकरण न किया जाए, जिसे प्रकाशितवाक्य में पशु की प्रतिमा के रूप में दर्शाया गया है। कैन के कृत्य का अनुकरण करना कैन की प्रतिमा बनाना है। कैन को दण्ड-निष्पादन का सातगुना न्यायादेश दिया गया था, और कैन से छठी पीढ़ी में लेमेक ने यह स्वीकार किया कि उसने अपने पिता का पाप दोहराया था, किन्तु उसका न्यायादेश सत्तर का सात गुना होगा।

> और लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा, हे आदा और सिल्ला, मेरी वाणी सुनो; हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर कान लगाओ: क्योंकि मैंने अपने घाव के बदले एक पुरुष को, और अपनी चोट के बदले एक युवक को मार डाला है। यदि कैन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो निश्चय ही लेमेक का सतहत्तर गुना लिया जाएगा। उत्पत्ति 4:23, 24।

पिछला पद परमेश्वर के वचन के उन केवल तीन स्थलों में से पहला है, जहाँ संख्याएँ गुणन के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। अंतिम भी पहले के समान है।

> तब पतरस ने उसके पास आकर कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई मेरे विरुद्ध पाप करे, तो मैं उसे कितनी बार क्षमा करूँ? क्या सात बार तक? यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे यह नहीं कहता कि सात बार तक, परन्तु सत्तर गुणा सात बार तक। मत्ती 18:21, 22.

सत्तर का सात गुना चार सौ नब्बे होता है, और पवित्र इतिहास में चार सौ नब्बे वर्षों की तीन अवधियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक परीक्षा-काल की एक अवधि को दर्शाती है। पवित्रस्थान, राजाओं और सेना के लिए चार सौ नब्बे-चार सौ नब्बे वर्षों की अवधियाँ दर्शाई गई हैं। राजाओं के लिए निर्धारित अवधि 1097 ईसा पूर्व में शाऊल के अभिषेक के साथ आरम्भ हुई और 607 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर की पहली घेराबंदी तक चली, जब दानिय्येल को बन्दी बना लिया गया था।

पवित्रस्थान के लिए निर्धारित परीक्षा-काल के चार सौ नब्बे वर्ष 1006 ईसा पूर्व में सुलैमान के मंदिर के समर्पण से आरम्भ हुए और 516 ईसा पूर्व में निर्वासनोत्तर मंदिर के समर्पण तक चले। सेना के लिए चार सौ नब्बे वर्षों की यह अवधि 457 ईसा पूर्व से 34 ईस्वी तक थी।

कैन के सात गुने चेतावनीपूर्ण न्याय-संदेश और चिह्न से आरम्भ होकर लेमेक के सत्तर बार सात गुने तक का क्रम चार सौ नब्बे वर्ष की एक प्रतीकात्मक परिवीक्षा-अवधि को दर्शाता है। कैन के चिह्न द्वारा निरूपित विद्रोह को उत्तरोत्तर तीव्र होता हुआ दर्शाया गया है, जो जलप्रलय भेजने के पीछे परमेश्वर के उद्देश्य के अनुरूप है।

> और परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता बहुत अधिक थी, और उसके हृदय के विचारों की प्रत्येक कल्पना निरंतर केवल बुरी ही थी। और यहोवा को खेद हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया था, और वह अपने हृदय में दुःखी हुआ। और यहोवा ने कहा, मैं उस मनुष्य को, जिसे मैंने सृजा है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; मनुष्य को भी, पशुओं को भी, रेंगने वाले जीवों को भी और आकाश के पक्षियों को भी; क्योंकि मुझे खेद है कि मैंने उन्हें बनाया। उत्पत्ति 6:5–7।

कैन की छठी पीढ़ी के लेमेक को शेत के वंश के लेमेक के विपरीत, विद्रोहियों के एक विशिष्ट वर्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। दोनों लेमेक अपनी-अपनी गवाहियों में अनुग्रह-काल की समाप्ति को चिह्नित करते हैं: एक 490 की अभिव्यक्ति द्वारा और दूसरा अपनी मृत्यु द्वारा। दोनों में संख्यात्मक प्रतीकवाद निहित है, जिसका सीधा संबंध विजयी कलीसिया की त्रिविध संरचना से है। कैन के वंश का लेमेक राजाओं, पवित्रस्थान और सेना के लिए निर्धारित 490-वर्षीय तीन अवधियों के अनुरूप है, और शेत के वंश के लेमेक में भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के लिए सात की मुहर समाहित है। शेत के वंश का लेमेक प्रकाशितवाक्य चौदह के तीन स्वर्गदूतों में से दूसरा है, और कैन के वंश का लेमेक तीसरा स्वर्गदूत है, जो पशु, उसकी प्रतिमा, छाप और उसके नाम की संख्या के विषय में चेतावनी देता है। प्रकाशितवाक्य चौदह, पद 9/11, उन लोगों की पहचान कराते हैं जो कैन का शाप प्राप्त करते हैं।

> और उनके पीछे तीसरा स्वर्गदूत आया, जो ऊँचे स्वर में कह रहा था, यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करे और अपने माथे पर या अपने हाथ पर उसकी छाप ग्रहण करे, तो वह परमेश्वर के प्रकोप की वह मदिरा पीएगा, जो उसके क्रोध के कटोरे में बिना मिलावट के उँडेली गई है; और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने उसे आग और गन्धक से यातना दी जाएगी: और उनकी यातना का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा: और उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करने वालों तथा उसके नाम की छाप ग्रहण करने वाले किसी भी व्यक्ति को न दिन में विश्राम मिलता है, न रात में। प्रकाशितवाक्य 14:9–11।

प्रकाशितवाक्य 15:2 उन लोगों की पहचान बताता है, जिनका प्रतिनिधित्व शेत के वंशज लेमेक करते हैं:

> और मैंने मानो अग्नि से मिश्रित काँच का एक समुद्र देखा: और जिन्होंने उस पशु पर, उसकी प्रतिमा पर, उसकी छाप पर और उसके नाम की संख्या पर विजय प्राप्त की थी, उन्हें परमेश्वर की वीणाएँ लिए हुए उस काँच के समुद्र पर खड़े देखा। प्रकाशितवाक्य 15:2।

शेत के वंश का लेमेक अपनी मृत्यु के द्वारा द्वार के बंद होने को चिह्नित करता है। कैन के वंश का लेमेक चार सौ नब्बे वर्षों के परिवीक्षाकाल के अंत में द्वार के बंद होने को चिह्नित करता है। कैन के चिह्न को ऐसे चरित्र के विरुद्ध चेतावनी के रूप में देखा जाना था, जिसमें तीन प्रमुख भविष्यसूचक लक्षण प्रकट हुए थे। उसने परमेश्वर के निर्देशानुसार परमेश्वर की आराधना में सम्मिलित होने से इनकार किया; उसने ईर्ष्याजनित प्रचंड क्रोध प्रकट किया और अपने छोटे भाई की हत्या कर दी और तीसरे, उसने पश्चात्ताप करने से इनकार किया।

कैन ने दस आज्ञाओं की पहली पटिया पर अंकित आज्ञाओं का उल्लंघन किया था; पहली पटिया परमेश्वर के साथ मानवजाति के संबंध को दर्शाती है, और दूसरी पटिया मनुष्यों के परस्पर संबंध को दर्शाती है। उसके विद्रोह का चिह्न यह दर्शाता था कि वह व्यवस्था का उल्लंघन करने वाला था और उसमें कोई पश्चात्ताप नहीं था। कैन और लेमेक शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय तीसरे स्वर्गदूत के बंद द्वार को दर्शाते हैं। हनोक, मतूशेलह, लेमेक और नूह उस इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हनोक द्वारा निरूपित पहले स्वर्गदूत के आगमन से आरंभ होता है; इसके बाद दूसरे स्वर्गदूत के रूप में लेमेक का आगमन होता है, फिर मध्यरात्रि की पुकार के रूप में मतूशेलह का आगमन होता है, जो दूसरे स्वर्गदूत अर्थात् लेमेक के संदेश को सामर्थ्य प्रदान करती है, और फिर तीसरे स्वर्गदूत के रूप में नूह जलप्रलय के बंद द्वार को दर्शाता है।

लेमेक की मृत्यु जलप्रलय से पाँच वर्ष पहले हुई थी, और यह घटना शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय द्वार बंद होने से पाँच प्रतीकात्मक वर्ष पहले के समय को इंगित करती है। 777 वर्ष की आयु में लेमेक की मृत्यु के समय ही विजयी कलीसिया पर मुहर लगाने का कार्य पूरा होता है। फिर, जहाज़ का द्वार अलौकिक रूप से बंद किए जाने से सात दिन पहले, पशु जहाज़ में प्रवेश करने लगे।

जिस दिन मतूशेलह की मृत्यु हुई, वह उन सात दिनों का पहला दिन था। द्वार बंद होने से पहले दी गई अंतिम चेतावनी एक दोहरा संदेश थी: पशुओं का दृश्य-प्रदर्शन और उसके साथ उस भविष्यवाणी की पूर्ति, जिसकी उद्घोषणा अब तक मरने वाले सबसे दीर्घायु मनुष्य के संपूर्ण जीवनकाल में होती रही थी। वह भविष्यवाणी मतूशेलह के नाम में निहित थी, जिसका अर्थ है 'जब उसकी मृत्यु होगी, तब वह आ जाएगा।'

मानवजाति के लिए अंतिम चेतावनी का संदेश भविष्यवाणी की अनिवार्यता के कारण एक द्विविध संदेश होना ही चाहिए, जैसा कि पशुओं के प्रवास के उन सात दिनों द्वारा दर्शाया गया है, जो मतूशेलह की मृत्यु के साथ आरंभ हुए थे और हनोक की उस भविष्यवाणी की पूर्ति थे, जिसकी घोषणा उसके पुत्र के नाम के माध्यम से की गई थी। पशुओं के प्रवास के सात दिन मतूशेलह की मृत्यु और प्रवास करने वाले पशुओं के द्विविध संदेश की पहचान तीसरे स्वर्गदूत के मुहर लगाने के संदेश के रूप में कराते हैं। यीशु सदैव आरंभ के माध्यम से अंत को दर्शाते हैं, और प्रकाशितवाक्य में, प्रकाशितवाक्य अठारह के तीसरे स्वर्गदूत के साथ पद चार की दूसरी वाणी जुड़ जाती है, ठीक वैसे ही जैसे मध्यरात्रि की पुकार दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ जुड़ी थी। अंतिम चेतावनी का संदेश सदैव एक आंतरिक और बाह्य संदेश के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कलीसियाओं और मुहरों के भविष्यवाणीय संबंध द्वारा दर्शाया गया है। दानिय्येल ग्यारह में अंतिम चेतावनी का संदेश उत्तर और पूर्व का संदेश है। नूह के समय में मतूशेलह और प्रवास करने वाले पशु अंतिम चेतावनी का द्विविध संदेश थे।

777 के चिह्न से संबद्ध लेमेक की मृत्यु घेराबंदी के आरंभ से मेल खाती है, जब यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु हुई थी। इसी बिंदु पर उन निष्ठावान जनों पर मुहर लगाई जाती है जिनका प्रतिनिधित्व शेत का वंश करता है, और इसी बिंदु पर वे लोग भी चिह्न प्राप्त करते हैं जिनका प्रतिनिधित्व कैन का वंश करता है। हनोक आदम से सातवाँ था, और वह उस अवधि में अल्फा मार्गचिह्न का प्रतिनिधित्व करता है जिसके अंत में अंतिम और प्रथम, दोनों पीढ़ियाँ आठ की संख्या द्वारा निरूपित होती हैं। दोनों लेमेक परिवीक्षा-काल की समाप्ति को इंगित करते हैं, और लेमेक की मृत्यु घेराबंदी के आरंभ में परिवीक्षा-काल के बंद हो चुके द्वार का प्रतिनिधित्व करती है।

हनोक भविष्यवाणीय इतिहास का अल्फ़ा था, और भविष्यवाणी की अनिवार्यता के कारण उसे भविष्यवाणीय इतिहास के एक ओमेगा की पहचान करनी ही होगी। उस ओमेगा का प्रतिनिधित्व वे आठ प्राणी करते हैं जो मृत्यु का स्वाद चखे बिना पुराने संसार से नए संसार में गए थे। हनोक और उन आठ प्राणियों ने नई पृथ्वी पर पहुँचने से पहले मृत्यु नहीं देखी। पशुओं के प्रवासन के सात दिनों में पुराना संसार समाप्त हुआ और नए संसार का आरंभ वर्षारहित सात दिनों से हुआ। फिर 17वें दिन से आरंभ होकर पाँच महीनों तक वर्षा ही वर्षा होती रही, जब तक कि परमेश्वर ने उन पाँच महीनों के अंत में सत्रहवें दिन वर्षा को रोक नहीं दिया।

पाँच महीने

प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में पाँच महीनों की अवधि के दो साक्षी हैं और इस अध्याय में समय-संबंधी तीन पृथक् भविष्यवाणियाँ हैं। पाँच महीनों की पहली अवधि पद पाँच में प्रस्तुत की गई है; पाँच महीनों की दूसरी अवधि पद दस में है और तीन सौ इक्यानवे वर्षों तथा पंद्रह दिनों की अवधि पद पंद्रह में दी गई है। पद 5, 10 और 15 इस्लाम से संबंधित समय की भविष्यवाणी को चिह्नित करते हैं, जिसमें भविष्यसूचक अवधि के आरंभ में पाँच महीनों के दो साक्षी हैं। पद 5 और 10 दोनों पाँच महीनों की एक अवधि को चिह्नित करते हैं, इसलिए पंक्ति पर पंक्ति रखने पर पद पाँच और पद दस का योग पंद्रह होता है। अतः, पहले पाँच महीने 15 हैं और तीन सौ इक्यानवे वर्षों तथा पंद्रह दिनों की अवधि पद 15 में दी गई है। पद 5, 10 और 15 का अनुक्रम और उनकी संरचना पंद्रह की दो संख्याओं को चिह्नित करते हैं, और पहले दो पदों में, जिनका संयुक्त योग पंद्रह होता है, एक सौ पचास वर्ष की अवधि वाली दो

समय-संबंधी भविष्यवाणियाँ हैं।

पंद्रहवाँ पद तीन सौ इक्यानवे वर्षों और पंद्रह दिनों की समय-संबंधी भविष्यवाणी प्रस्तुत करता है। मसीह ने पंद्रह को तीन पदों में पिरोया है, और उन्हीं पदों में निर्दिष्ट भविष्यसूचक समय का उपयोग करते हुए, उन्होंने पाँचवें और दसवें पद को जोड़कर निरूपित संख्या 15 को पृथक रूप से चिह्नित किया, ताकि पंद्रहवें पद के साथ संरेखित किए जाने पर पंद्रह का दोहरीकरण हो। फिर मसीह ने तीनों परस्पर संबद्ध भविष्यवाणियों का समापन पंद्रह दिनों के साथ किया।

इस अध्याय को समझने की कुंजी वर्ष 627 में हुआ नीनवे का युद्ध है, जिसके पाँच वर्ष बाद, वर्ष 632 में, मुहम्मद की मृत्यु होती है, जिससे पाँच महीने की पहली भविष्यवाणी का आरंभ होता है। मुहम्मद की मृत्यु के दस वर्ष बाद फ़ारस की सेनाएँ नष्ट कर दी गईं, जो मुहम्मद की इस भविष्यवाणी के अनुरूप था कि फ़ारस और रोम, दोनों शक्तियाँ पराजित होंगी। इसलिए प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय का ऐतिहासिक घटनाक्रम फ़ारस और रोम के बीच हुए नीनवे के युद्ध से आरंभ होता है। फिर पाँच वर्ष बाद मुहम्मद की मृत्यु होती है, और इस प्रकार पाँचवें पद में वर्णित एक सौ पचास वर्षों का आरंभ होता है। दस वर्ष बाद, 642 में, फ़ारस नहावंद के युद्ध में पराजित होता है। इस्लाम ने नहावंद के युद्ध को “विजयों की विजय” कहा। प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय के पहले पंद्रह वर्ष पाँच वर्षों की एक अवधि और उसके बाद दस वर्षों की अवधि को दर्शाते हैं। समय-संबंधी अंतिम भविष्यवाणी 11 अगस्त, 1840 को पूरी हुई। इस घटना से दस दिन पहले, जोसायाह लिच ने उस्मानी प्रभुत्व के अंत के संबंध में अपनी अद्यतन भविष्यवाणी प्रकाशित की। प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय में वर्णित इस्लाम के अंतिम पंद्रह दिन, जोसायाह लिच के कार्य द्वारा, पाँच दिनों और उनके बाद दस दिनों में विभाजित होते हैं, क्योंकि यीशु सदैव आरंभ के माध्यम से अंत का चित्रण करते हैं।

हम अगले लेख में इन बातों पर चर्चा जारी रखेंगे।